

SARDAR PATEL UNIVERSITY
T. Y. B. A. (External) EXAMINATION
Friday, 5th April 2019
10.00 a.m. to 1.00 p.m.
Sanskrit : Paper-VI
SAN-306 : वेदान्तसारः, ईशोपनिषद्, केनोपनिषद्

कुल गुण : १००

प्र.१ **कोर्धपण** के सानुवाए सभजापो. (२०)

- (१) शमादयस्तु शमदमोपरतितितिक्षासमाधान श्रद्धाख्याः।
- (२) असर्पभूतायां रज्जौ सर्पारोपवद्वस्तुन्यव स्त्वारोपोऽध्यारोपः।
- (३) समाधिर्द्विविधः सविकल्पको निर्विकल्पकश्चेति।
- (४) अथ जीवन्मुक्तलक्षणमुच्यते।

प्र.२ अहं ब्रह्मास्मि। महावाक्य सभजापो. (२०)

अथवा

प्र.२ तत्त्वमसि। महावाक्य सभजापो. (२०)

प्र.३ **कोर्धपण** के विशेषे टूंकनोध लणो. (२०)

- (१) अध्यारोप
- (२) प्रतिभिम्भवाए
- (३) सृष्टिप्रकिया
- (४) अपिधा

प्र.४ **कोर्धपण** के मंत्रो सानुवाए सभजापो. (२०)

- (१) ईशावास्यमिदं सर्वं यत् किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद् धनम्॥
- (२) वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम्।
ऊ क्रतो स्मर कृतं स्मर क्रतो स्मर कृतं स्मर॥
- (३) यन्मन सा न मनुते येनाहुर्मनो मतम्।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि तदं यदिदमुपासते॥
- (४) तस्मिंस्त्वयि किं वीर्यम् इति।
अपीदं सर्वमाददीय यदिदं पृथिव्यामिति॥

प्र.५ **कोर्धपण** के विशेषे टूंकनोध लणो. (२०)

- (१) विधा-अपिधा
- (२) संभूति-असंभूति
- (३) केनोपनिषद् नो शान्तिपाठ
- (४) केनोपनिषद् शीर्षक